प्रातःक्लास 10/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

(आज सवेरे 3 बजे से 4 बजे तक सभी योग में बैठे थे) ओमशान्ति। बच्चे सवेरे उठकर क्या करते थे? बाप को याद करते थे और चक्र को भी याद करते थे। बस ना। और त(ी) कोई बड़ी बात नहीं। कोई पहाड़ फोड़ने वा समुद्र को पार करने आदि की तो बात ही नहीं। अपन को आत्मा तो समझना ही होता है। बाप भी कहते हैं अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करते रहो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। अभी तुम तमोप्रधान बने हो फिर सतोप्रधान बनना है। अभी तुम कलयुग में हो ,न कि सतयुग में। सतयुग में सतोप्रधान और कलयुग में तमोप्रधान। अभी यह तो कॉमन बात है। हां, समझाने में थोड़ा टाइम लगता है। इसमें मूंझने वा हार्टफेल होने की कोई दरकार नहीं। सारे विश्व का मालिक बनना है तो ज़रूर कुछ तो मेहनत होगी ही। स्थूल कोई मेहनत नहीं है। इसमें सूक्ष्म मेहनत होती है। बाप ऐसे भी नहीं कहते हैं कि बैठ कर मुझे याद करो। यह तो सीधी–2 बात है। बच्चे, तुम समझते हो हम आत्मा सतोप्रधान थी, अभी तमोप्रधान बने हैं। अभी सतोप्रधान बनने का सिवाय याद की और कोई उपाय नहीं। याद से ही आयु बड़ी होती है। पाप ख़त्म हो जाते हैं। सतयुग में दुःख आदि की बात ही नहीं; क्योंकि पवित्र आत्माएं हैं। तुम पवित्र सतोप्रधान बन जाते हो। कितनी सहज ते सहज बात है। बाप को याद करना है और सतोप्रधान बनना है। जाना भी है ज़रूर। यहां तो रहने का नहीं है। जिन्हों के पास बहुत कारखाने आदि हैं उन्हों की उतनी दिल नहीं लगेगी। माया खैंचती रहेगी। बाप तो है ही ग़रीब निवाज़। ग़रीबों को ही साहूकार बनाना है। ग़रीबों का बुद्धियोग इतना नहीं जावेगा। वह सहज ही समझ जाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है, पवित्र भी बनना है। पवित्र बनते–2 फिर अपवित्र न बनना चाहिए। बाप यह भी समझाते हैं पवित्रता के लिए विघ्न पड़ेंगे, अबलाओं पर अत्याचार होंगो। नाम ही है दुर्योधन, दुःशासन। यह है ही गीता का एपीसोड। बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग की पुस्तक आदि रॉंग बनी हुई है। कृष्ण भगवानुवाच ही ग़लत हो गया। सिर्फ़ दो अक्षर करैक्ट है। मनमनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। जिसके लिए ही तुम सवेरे में बैठे थे। यह निश्चय रखना चाहिए बाप को याद करने से हम तमोप्रधान से रजो, रजो से सतो, फिर सतोप्रधान बनते जावेंगे। और कोई उपाय नहीं। और कोई ऐसी पढ़ाई पढ़ा न सके। बाप ही बैठ समझाते हैं। यह ज्ञान की समझानी भी अभी तुमको मिलती है। फिर तो ज्ञान की दरकार ही नहीं रहती। यह ज्ञान एक के पास नहीं है। फिर बच्चों को देते हैं। बस, फिर वापस चले जाते हैं। वर्सा पा लिया, ज्ञान पूरा हुआ। अभी इसमें डिफीकल्ट क्या है? सिर्फ़ माया के तूफान विघ्न डालते हैं। कहते हैं बाबा हम आप को याद करते हैं बीच में अनेक प्रकार के माया के तूफान आते हैं। संकल्प और विकल्प कहा जाता है। इस समय रावण राज्य में तुम्हारा जो भी संकल्प होता है वह विकल्प हो जाते हैं। वहां तुम्हारे संकल्प नहीं बनते। तुम ऐसा कोई काम नहीं करते हो जिससे किसको दुःख हो। सतोप्रधान किसको दुःख थोड़े ही देंगे। वहां तो एक ही धर्म है। मनुष्य पीस–2 मांगते रहते हैं ; परन्तु बाप ने समझाया है शान्ति का सागर तो एक ही बाप है। उनको ही सभी कहते हैं शान्तिदेवाः। बाकी तो कोई कर न सके। शान्ति का सागर एक ही शान्ति देंगे। वह सभी का सागर है। बाप बच्चों को थोड़ी ही बात समझाते हैं। इसमें ज़रा भी मूंझने की बात नहीं है। बाप कहते हैं पहले–2 तो बाप का परिचय दो। बाप को कोई भी जानते नहीं। बाप है एक। बाकी सभी ब्रदर्स हैं। बाप से वर्सा ज़रूर मिलता है। अभी तुम जानते हो हम संगमयुग पर बैठे हैं। और बाकी सभी आयरन एज कलयुग में हैं। तुम जानते हो सतयुग में सुख और शान्ति है। शान्तिधाम में भी शान्ति है। चित्र तो क्लीयर है। बाबा ने पर्चे जो छपवाई है वह भी हाथ में हो। पूछना है तुम पतित नर्कवासी हो या पावन स्वर्ग़वासी हो? बाप ने तो स्वर्ग़ में भेजा था। बाप स्थापना ही स्वर्ग़ की करते हैं। सतयुग में मनष्य सुखी हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में हैं। इन बातों को समझेंगे वही जो यह(ँ) के होंगे। कोई झट समझ लेंगे। कोई को समझने में देरी होगी। ऐसे भी नहीं पहले जो आते हैं, उनसे पिछ(ले)

वाले पढ़कर तीखे नहीं हो सकते। नहीं। फ्री हैं। भल कोई पिछाड़ी में भी आवे तो भी पहले वालों से तीखे चले जावेंगे। बाप तो सिर्फ़ कहते हैं मुझे याद करो। आत्मा जो प्योर बनी है वही फिर इम्प्योर बनी है। फिर प्योर बन मुक्ति–जीवनमुक्ति में चले जावेंगे। इसमें मूँझने की भी कोई बात नहीं। इस पढ़ाई से तुम कितना ऊँच मर्तबा पाते हो। और पढ़ाने वाला है एक टीचर। तुम हो नाईब टीचर्स। यह है रूहानी स्कूल। तुम देखते हो पुरानों से नये तीखे–2 चले जाते हैं। समझाने का तो सिर्फ़ यही है। बाप ने कहा है यह ज्ञान सभी धर्म वालों के लिए है। मनुष्य मात्र के लिए है। सिर्फ़ कहना है तुम तो आत्मा हो ना। आत्माएं सभी एक बाप के संतान हैं। शान्तिधाम से आत्माएं यहां आती हैं पार्ट बजाने लिए। वह मुक्तिधाम, वह है जीवनमुक्ति धाम। मुक्ति में सिर्फ़ आत्माएं ही रहती हैं। जीवनमुक्ति में शरीर धारण कर पार्ट बजाना होता है। कितना सहज है। अलफ़ और बे पढ़ाया जाता है। पहले–2 बाप कहते हैं मुझ अलफ़ का परिचय दो। तो फिर सहज समझते जावेंगे। इनमें हम प्रश्न कैसे कर सकते हैं बाबा यह क्यों नहीं? ऐसे क्यों नहीं? बाबा से तुम क्या पूछते हो? बाप की तो आज्ञा माननी चाहिए ना। तुम पावन थे, पतित बने फिर पावन बनना है। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। ऐसा कोई सन्यासी उदासी नहीं जो ऐसे कहे कि तुम आत्माएं सभी भाई–2 हो। बाप एक ही है। लौकिक बाप से हद का वर्सा, पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सन्यासी निवृत्तिमार्ग वाले कह न सके। वह तो कहते सुख है ही काग विष्टा समान। उन्हों का धर्म ही अलग है। कितनी माईयाँ आदि भी जाकर उन्हों के फॉलोवर्स बनती हैं। यह तो आते ही बाद में हैं। शुरू में तो है आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले। उनकी शि(क्षा) बाप ही देते हैं और कोई दे न सके। वास्तव में उनको तीर्थ यात्रा करने, पुस्तक आदि पढ़ने का भी हुकुम नहीं है। दरकार ही नहीं रहती। जैसे वह हद के सन्यासी हैं वैसे तुम भी बेहद के सन्यासी हो। तुमको भी हुकुम नहीं। बाप कहते हैं सिर्फ़ मामेकं याद करो। वह हठयोगी सन्यासी कहते हैं ब्रह्म लीन होना है। वह अपन को तत्व ज्ञानी ब्रह्मज्ञानी कहलाते हैं। तुमको तो बाप ज्ञान देते हैं। ब्रह्म वा तत्व थोड़े ही ज्ञान देंगे। उनको ज्ञान सागर कहेंगे क्या? तो बाप समझाते हैं वह धर्म बिल्कुल अलग है। उन्हों का फॉलोवर्स बनना तो अंधश्रद्धा ब्लाइन्ड फेथ है। बाप जब आते हैं तब स्वर्ग़ का वर्सा मिलता है। बाप बैठ अपना परिचय देते हैं। तुम आपस में भाई–2 हो। तुम्हारा यह बाप है। बाप कहते हैं मैं कल्प–2 आता हूँ। साधारण तन में बैठ तुमको अपना परिचय देता हूं। रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाता हूँ जिससे तुम स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो; परन्तु यह अंलकार स्वदर्शनचक्र आदि का तुम ब्राह्मणों को शोभेंगे नहीं; इसलिए विष्णु को दिखाया है। विष्णु के अर्थ को भी कोई नहीं जानते हैं। विष्णु चतुर्भुज कौन है? उनको यह शंखा चक्र आदि क्यों दिया है? कुछ भी बता न सकेंगे। सवाल वह पूछते हैं जो खुद जानते हैं। न जानने वाले तो प्रश्न पूछ न सकें। कोई से भी पूछो शिवबाबा की जीवन कहानी तो सुनाओ वह कब आये थे क्या आकर किया कब बता न सकेंगे। कितनी तुमको नॉलेज मिलती है। बाप समझाते हैं बच्चे मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हों। और बातें छोड़ दो। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। सभी पाप भस्म होंगे इस योग अग्नि से। योग अक्षर भी कॉमन है। बाप तो कहते हैं याद करो। वह लोग याद नहीं सिखलाते। वह न तो बाप को, न आत्मा को जानते हैं। आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। फिर कहेंगे नाम–रूप से न्यारा है। अच्छा, नाम–रूप कुछ तो बताओ। कुछ भी नहीं। इसका तो कोई मतलब ही नहीं; परन्तु यह सभी ड्रामा के बस है। बाप कहते हैं जो भी अपने को पूजा कराने वाले हैं यह असुर ही ठहरे। है ड्रामा। ऐसे भी नहीं कि फिर नहीं होंगे। फिर भी होंगे ज़रूर। इस समय की बात ही बाप समझाते हैं। इस संगम का किसको भी पता नहीं है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है और दिल से लगता है हम श्रीमत से इतना श्रेष्ठ बनते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा मालिक बनाता हूँ। कहां शिवबाबा पुनर्जन्म रहित, कहां श्री कृष्ण 84 जन्म लेने

वाला। ज़रूर नम्बरवन वाला ही नम्बर लास्ट में रहेगा। लास्ट और फर्स्ट दोनों सामने बैठे हैं। ब्रह्मा की रात और ब्रहमा का दिन। ब्रह्मा सो दिन में विष्णु। फिर दिन से रात होती है तो विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। इन कनेक्शन को कोई जानते नहीं हैं। तुम अच्छी रीत समझते हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। वह फिर समझते हैं चक्र फिराने से गला कटते हैं। सभी को खलास कर देते हैं। कृष्ण का चित्र दिखाते हैं अकासुर, बकासुर को मारा। कितना बड़ा हिंसक बना दिया है और फिर कहते रानियों को भगाया है, यह किया। डबल हिंसक बना दिया है। कितनी ग्लानी की है। तुम कोई की बेअदबी कर्तव्य झट कहेंगे यह क्या करते हो? यह तो बड़ा ही पाप है। बाप कहते हैं यह भारतवासियों का ही काम है। बाप भी भारत में ही आकर समझाते हैं। तुम कितने ऊँच थे फिर गिरते–2 तमोप्रधान बने हो। मैं तो अपने पूरे टाइम पर आता हूं। इस ड्रामा को सिवाय तुम्हारे कोई भी नहीं जानते। बहुत ही सहज बात है। सिर्फ़ बाप को और वर्से को याद करना है। खाली बाप क्या करेगा? वर्सा भी याद आना चाहिए। बाप से वर्सा कैसे सहज मिलता है? मूँझने की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं तुम जो करते हो सो बिल्कुल बनो। मूँझो नहीं। बन्दर है लोग है। तुम रत्न देंगे वह रत्नों को भी पत्थर समझ फेंक देंगे। इन रत्नों को तो तुम ही जानते हो। इनकी वैल्यु बहुत है। तुम्हारे पास तो वहां कारुन के ख़ज़ाना होता है। विचार करो हम कितना साहूकार थे। जो बाद में मन्दिर बनाया उसमें कितना माल था। वह एक–एक चीज़ लाखों रुपये का होता है। फिर भी यह सभी रिपीट होंगे ना। कई मूँझते हैं मकान तो टूट गया फिर कैसे वही बनेंगे? हीरों की खानियां फिर कैसे निकलेंगी? ऐसी–2 बातों में मूँझ कर फिर आते ही नहीं। ड्रामा को समझते ही नहीं हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है ना। गॉड इज़ वन। क्रियेटर इज़ वन। क्रियेशन भी वन। अनेक दुनियाएं होती नहीं। वह तो समझते हैं अनगिनत दुनियाएं हैं। फिर उनसे कौन बैठ माथा मारे। तुम जानते हो दुनियां एक ही है। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है यह सभी तुम्हारी बुद्धि में है। 84 का चक्र, युग भी समझाया है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जब बाप आकर तुमको यह बनाते हैं। तुम्हारा फोटो भी निकाला था राजयोग और भविष्य का। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम यह बन जावेंगे। कितनी सहज बात है। सवेरे में तुम एक घंटा बैठे। ऐसे भी नहीं कि एक घंटा (हो) 5 मिनिट भी मुश्किल याद में बैठे होंगे। अपना चार्ट बताओ कहां–2 बुद्धियोग भटका। फिर बुद्धि को लगाया। बाप ने कहा है बुद्धि योग भागेगा। फिर लगाओ। कोई तो भल कितना भी माथा मारे योग मे रह न सकेंगे या करने आवेगा ही नहीं। कोई का 20 मिनट, कोई का 10 मिनिट लगेगा। सारा समय तो कोई का हो न सके। गपोड़ा लगाते होंगे हमारा तो योग बहुत अच्छा लगा। तो दूसरा, तीसरा घंटा भी बैठ जाओ। कमाई करो। इस योग से तुम अमरपुरी के मालिक बनते हो। अमर बन जाते हो। वहां काल खाता नहीं। दुनियां में किसको भी पता नहीं कि सतयुग, त्रेता में अकाले मृत्यु होती नहीं। सतयुग को कोई जानते ही नहीं। तुमको भी आगे पता था क्या? अभी बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। रोशनी मिलती जाती है। सभी हैं अंधे। अंधे के औलाद अंधे; परन्तु अपन को अंधा कोई समझते थोड़े ही हैं। दुनियां का चक्र कैसे फिरता है कुछ भी नहीं जानते। और धर्म वाले फिर भी जानते हैं। फलाना–2 टाइम पर आया। भारतवासी तो कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम बच्चे कितना नॉलेजफुल बनते हो। फील भी करते हो नॉलेज थी तब तो देवता बने। अभी फिर नॉलेज मिलती है तो तुम सो देवता बनते हो। मुख्य बात है बाप की(के) परिचय की। विलायत में भी तुम बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। बाबा विचार करते हैं इतनी सहज नॉलेज क्यों नहीं समझते हैं? उन्हों को समझा सकते हो जो सन्यासी लोग भी तुम्हारे पास आते हैं वह सहज राजयोग सिखाये नहीं सकते। वह तो एक ही गॉडफादर सिखलाते हैं। मनुष्य सृष्टि का बीज

रूप है उनमें सारी नॉलेज है। सन्यासी दे न सके। वह राजयोग सिखा नहीं सकते। वह तो है ही निवृत्तिमार्ग वाले। इसमें तो शारीरिक कोई–कोई क्रिया नहीं। बाप कहते हैं तुम मुक्तिधाम में थे तो तुम्हारी आत्मा प्योर थी। फिर प्योर बनना है। पार्ट बजा इम्प्योर बन जाते हैं। तो अपन को आत्मा समझो। आत्मा भी बहुत छोटी बिन्दी है। बाप परमात्मा भी बहुत छोटा बिन्दी है। आत्मा पवित्र बनकर भागेगी स्वीटहोम। तो प्राचीन भारत का योग यह है जिससे मुक्ति–जीवनमुक्ति मिलती है। बाप एक ही बार आकर यह राजयोग सिखलाते हैं। कोई फी(स) आदि भी नहीं देते। इसमें ज़रा भी खर्चा नहीं। सिर्फ़ बाप और वर्से को याद करो। बस। घूमो–फिरो कुछ भी करो पवित्र बनना है। अपवित्र आत्मा तो जा न सके। विकार में फंसे हुये हैं; इसलिए पुकारते हैं बाबा लिबरेट करो। बाप कहते हैं तुम याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश हो जावेंगे। आत्मा उड़ेगी। स्वर्ग़ में जो पहले जाने वाले हैं वही जावेंगे। तुम तो पीछे आते हो अपना–2 धर्म स्थापन करने। अभी सभी को वापस जाना है। बाप ही गाइड बनकर सभी को समझाते हैं। बहुत सहज बात है। अक्षर ही दो है। घर में भी रहो। नौकरी आदि भी भल करो। सिर्फ़ बाप को याद करो तो खाद निकल जाये। उनका ही भारत का प्राचीन राजयोग गाया जाता है। ऐसे अँग्रेज़ी में भी बैठ समझाओ तो सभी हियर–2 करेंगे। स्प्रीचुअल नॉलेज तो बरोबर यह है। और कोई जानते ही नहीं। यह नॉलेज देता रूह है। यह राजयोग हम बाप द्वारा सीख रहे हैं। फिर हम विश्व के मालिक बनेंगे। तो उसमें कोई भी चीज़ चित्र आदि की बिल्कुल दरकार नहीं। यह तो मोस्ट सिम्पुल बात है। रूहानी नॉलेज तो है ना। चित्रों आदि की भी बात नहीं। अपन को आत्मा निश्चय करना है इसमें ही मेहनत लगती है। घड़ी–2 देहअभिमान आ जाता है। उनको ही माया का तूफान कहा जाता है। तुम ज्योत जगाते हो। फिर तूफान लगने से बुझ जाते हैं। ड्रामा अनुसार राजधानी तो स्थापन होनी ही है। ऐसे कब न समझना तुम्हारी मिशन कोई फेल हो सकती है। नहीं। अविनाशी ईश्वरीय मिशन कब फेल न हो सके। स्थापना तो हो ही जानी है। बाप कहते हैं इनकी आत्मा को भी तूफान लगते हैं। मेरे को तो नहीं लगेंगे। तुम बच्चों को ही तूफान लगते हैं। दुनियां में कोई को भी पता नहीं है। यह राजाई कैसे स्थापन हो रही है। जिन्होंने कल्प पहले राज्य पाया है वह राजयोग सीखते रहते हैं। उसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। तुम एक्टर्स हो। आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है। वह कब विनाश नहीं हो सकता। यह है स्प्रीचुअल ड्रामा बना बनाया। बोलो पहले बाप को पहचानो तो फिर प्रश्न पूछने की बात न रहेगी। बाप से कोई भी प्रश्न पूछने का नहीं है। बाप अपना परिचय आपे ही देते हैं कि मुझे ऐसे ही आना पड़ता है। तुम किसको कहते हो श्रीकृष्ण भी 84 जन्म लेते हैं तो बिगर पड़ते हैं। कृष्ण का चित्र तो बहुत पसन्द आता है फिर लिखत काट देते हैं। भक्त है ना। तुम तो अभी जानते हो वह कैसे पुनर्जन्म लेते हैं। नाम–रूप आदि सभी बदल जाते हैं। राजा–रानी बाकी है प्रजा। एक राजा–रानी के लाखों प्रजा होती हैं। बीकानेर में राजा है। कितना बड़ा इलाका है। करोड़ तो प्रजा होगी। वहां तो इतनी प्रजा नहीं होती। फिर भी राजा–रानी , प्रजा होती है ना। नथिंग न्यू। कल्प पहले भी हुआ था। दिन–प्रतिदिन बच्चों नई–2 प्वाइन्ट्स मिलती रहती है। न सर्विस में थकना है, न याद में थकना है। जितनी सर्विस करेंगे उतना ही अच्छा होगा। इसमें हड्डियां भी दे देनी हैं। सभी को पैगाम देना है। अखबार में डालो। बच्चों को बाप से वर्सा कैसे मिलता है। याद से विकर्म विनाश होते हैं। ऐसी–2 बातें लिखें। बन्दरों को समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। जैसे भील लोग समझते हैं हमको तो काठियां ही करनी है। वह पढ़ाई को क्या जाने ? अभी तुमको नॉलेज मिली है। शिवबाबा से हमको वर्सा मिलता है हम महाराजा–महारानी बने थे। यह है ही नर से नारायण बनने की नॉलेज। नॉलेज से बड़ी खुशी होती है। विघ्न भी पड़ते हैं। कल्प पहले भी पड़े थे। इससे पार हो पुरुषार्थ करते रहना है। यह भी सब छोड़ा ना। देखा हमको बाबा से डबल ताज मिलती है। छोड़(ी) इन गधाई को। इन पैसों (से हम क्या) करेंगे? फट से छोड़ दिया। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।